3

दुःख का अधिकार

प्रस्तुत पाठ में बताया गया है कि व्यक्ति की वेशभूषा ही समाज में उसका स्थान निश्चित करती है। वेशभूषा ही व्यक्ति को समाज में उच्च स्थान दिलाती है और वेशभूषा ही उसे घृणा का पात्र बना देती है।

मनुष्य की पोशाकें उन्हें विभिन्न श्रेणियाँ में बाँट देती हैं। प्रायः पोशाक ही मनुष्य का अधिकार और उसका दर्ज़ा निश्चित करती है। वह हमारे लिए अनेक बंद दरवाज़े खोल देती है, परंतु कई बार ऐसी भी परिस्थितियाँ आ जाती हैं कि हम जरा नीचे झुक-कर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं। उस समय यह पोशाक ही बंधन और अड़चन बन जाती है, जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देती उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोकती है।

बाज़ार में फुटपाथ पर कुछ खरबूजे डलिया में और कुछ ज़मीन पर बिक्री के लिए रखे जान पड़ते थे। खरबूजों के समीप एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी रो रही थी। खरबूजे बिक्री के लिए थे, परंतु उन्हें खरीदने के लिए कोई कैसे आगे बढ़ता? खरबूजों को बेचने वाली तो कपड़े से मुँह छिपाए सिर को घुटनों पर रखे फफक-फफक कर रो रही थी।

लोग घृणा से उस स्त्री के संबंध में बातें कर रहे थे। उस स्त्री का रोना देखकर मन में एक कारण जानने का उपाय क्या था? फुटपाथ पर उसके समीप बैठ सकने में मेरी पोशाक ही व्यवधान बन खड़ी हुई। एक आदमी ने घृणा से एक तरफ़ थूकते हुए कहा-"क्या ज़माना है! लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और बेहया दुकान लगाकर बैठी है।"

दूसरे साहब अपनी दाढ़ी खुजाते हुए कह रहे थे, "अरे, जैसी नीयत होती है, अल्लाह वैसी ही बरकत देता है।"

सामने के फुटपाथ पर खड़े एक आदमी ने दियासलाई की तीली से कान खुजाते हुए कहा, "अरे! इन लोगों का क्या है? ये कमीने रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।"

परचून की दुकान पर बैठे लालाजी ने कहा, "अरे भाई! उनके लिए मरे-जिए का कोई मतलब न हो, पर दूसरे के धर्म-ईमान का तो ख्याल रखना चाहिए। जवान बेटे के मरने पर तेरह दिन का सूतक होता है और वह वहाँ सड़क पर बाज़ार में आकर खरबूजे बेचने बैठ गई है। हज़ार आदमी आते-जाते हैं, कोई क्या जानता है कि इसके घर में सूतक है। कोई इसके खरबूजे खा ले तो उसका ईमान-धर्म कैसे रहेगा? क्या अंधेर है?"

आस-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर पता चला कि उसका तेईस बरस का जवान लड़का था। घर में उसकी बहू और पोता-पोती हैं। लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा ज़मीन पर कछियारी करके परिवार का निर्वाह करता था। खरबूजों की डलिया बाज़ार में पहुँचाकर कभी लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता था। कभी माँ बैठ जाती।

लड़का परसों सुबह मुँह-अँधेरे बेलों में से पके खरबूजे चुन रहा था। गीली मेड़ की तरावट में विश्राम करते हुए एक साँप पर लड़के का पैर पड़ गया। साँप ने लड़के को डस लिया।

लड़के की बुढ़िया माँ बावली होकर ओझा को बुला लाई। झाड़ना-फूँकना हुआ। नागदेव की पूजा हुई। पूजा में दान-दक्षिणा चाहिए। घर में जो कुछ आटा और अनाज था, दान-दक्षिणा में उठ गया। माँ, बहू और बच्चे भगवाना से लिपट-लिपटकर रोए, पर भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला। सर्प के विष से उसका सब बदन नीला पड़ गया।

जिंदा आदमी नंगा भी रह सकता है परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जाए। उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा। चाहे उसके लिए माँ के हाथों की छन्नी-कंगना ही क्यों न बिक जाए।

भगवाना परलोक चला गया। घर में जो कुछ चूनी-भूसी थी उसे विदा करने में चली गई। बाप नहीं रहा तो क्या। लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे। दादी ने उन्हें खाने के लिए खरबूजे दे दिए लेकिन बहू का बदन बुखार से तवे की तरह तप रहा था। अब बुढ़िया को दुवन्नी-चवन्नी भी कौन उधार देता।

बुढ़िया रोते-रोते और आँखे पोंछते-पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूजे डलिया में समेटकर बाज़ार की ओर चली और चारा भी क्या था? बुढ़िया खरबूजे बेचने का साहस करके आई थी, परंतु सिर पर चादर लपेटे, सिर घुटनों में टिकाए हुए फफक-फफककर रो रही थी। कल जिसका बेटा चल बसा। आज वह बाज़ार में सौदा बेचने वाली है। हाय रे! पत्थर दिल!

उस पुत्र वियोगिनी के दुःख का अंदाज़ा लगाने के लिए पिछले साल अपने पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुःखी माता की बात सोचने लगा। वह संभ्रांत महिला पुत्र की मृत्यु के बाद अढ़ाई मास तक पलंग से उठ न सकी थी। उन्हें पंद्रह-पंद्रह मिनट बाद पुत्र वियोग से मूर्च्छा आ जाती थी और मूर्च्छा न आने की अवस्था में आँखों से आँसू न रुक सकते थे। दो-दो डॉक्टर हरदम सिरहाने बैठे रहते थे। हरदम सिर पर बर्फ रखी जाती थी। शहर के लोगों के मन उसके पुत्र-शोक से द्रवित हो उठे थे।

जब मन को सूझ का रास्ता नहीं मिलता तो कदम तेज़ हो जाते हैं। उसी हालत में नाक ऊपर उठाए, राह चलतों से ठोकरें खाता चला जा रहा था। सोच रहा था....

शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और दुःखी होने का भी एक अधिकार होता है।

—यशपाल जैन

शिक्षा हमें किसी दुःखी व्यक्ति से घृणा नहीं करनी चाहिए।

शब्द-पोटली

दर्ज़ा – स्थान, श्रेणी। अनुभूति – संवेदना। सहसा – अचानक। व्यवधान – रुकावट। बेहया – बेशर्म। नीयत – इरादा। कछियारी – सब्जियों की खेती। संभ्रांत – सम्मानित। द्रवित होना – पिघलना, दया दिखाना। सहूलियत – सुविधा।

अभ्यास

संकलित मूल्यांकन

पाठ बोध

(क) दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए:

1. मनुष्यों को श्रेणियों में बाँट देती हैं–

   पोशाकें ☐ गलियाँ ☐ सड़कें ☐ वस्तुएँ ☐

2. औरत बाज़ार में बेच रही थी–

   तरबूज़ ☐ खरबूज ☐ ककड़ी ☐ लौकी ☐

3. खरबूजों के पास बैठकर औरत–

हँस रही थी ☐ गा रही थी ☐ रो रही थी ☐ खा रही थी ☐

4. साँप के द्वारा डस लेने से औरत का लड़का–

जिंदा हो गया ☐ खड़ा हो गया ☐ रो पड़ा ☐ मर गया ☐

5. एक साहब खुजला रहे थे अपना–

सिर ☐ दाढ़ी ☐ पैर ☐ हाथ ☐

6. कल जिसका बेटा चल बसा, आज वह बाज़ार में–

सौदा बेच रही है। ☐ नाच रही है। ☐ गा रही है। ☐ घूम रही है। ☐

(ख) नीचे दिए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए:

दुःखी, व्यवधान, पोशाक, ओझा, लड़का

1. उस समय यह _____ ही बंधन और अड़चन बन जाती है।
2. मेरी पोशाक ही _____ बन खड़ी हो गई।
3. उसका तेईस बरस का जवान _____ था।
4. लड़के की बुढ़िया माँ _____ को बुला लाई।
5. _____ होने का भी एक अधिकार होता है।

(ग) सत्य कथन पर ✓ तथा असत्य पर ✗ लगाइए:

1. पोशाक ही समाज में स्थान दिलाती है। ☐
2. बुढ़िया का बेटा तेईस वर्ष का था। ☐
3. भगवाना को बिच्छू ने काट लिया था। ☐
4. बुढ़िया बाज़ार में तरबूज़ बेचने आई थी। ☐
5. लेखक औरत को देखकर दुःखी हो रहा था। ☐

(घ) निम्नलिखित को सुमेल कीजिए:

(अ)	(ब)
1. पोशाक	(a) जवान लड़का
2. कटी	(b) भूसी
3. बूढ़ी औरत	(c) अड़चन
4. भगवाना	(d) पतंग
5. चूनी	(e) बावली माँ

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. लेखक खरबूजे बेचने वाली स्त्री से उसके रोने का कारण जानने के लिए फुटपाथ पर उसके पास क्यों नहीं बैठ सका?
2. लोग खरबूजे खरीदने के लिए आगे क्यों नहीं आ रहे थे?
3. खरबूजे बेचने वाली औरत क्यों रो रही थी?
4. भगवाना अपने परिवार को कैसे पालता था?
5. भूख से बिलबिलाते बच्चों को बुढ़िया ने खरबूजे दिए। उसने रोटी क्यों नहीं बनाई?
6. संभ्रांत महिला के पुत्र की मृत्यु के बाद महिला की देखभाल कैसे की गई?

भाषा बोध

(च) निम्नलिखित के विलोम शब्द लिखिए:

अधिकार × _____	बंद × _____	नीचे × _____	गिराना × _____
ज़मीन × _____	विक्रय × _____	घृणा × _____	जवान × _____
मृत्यु × _____	शहर × _____	धर्म × _____	अमीरी × _____

(छ) निम्नलिखित शब्दों के लिंग निर्धारित कीजिए:

पोशाक – _____	दरवाजा – _____	स्त्री – _____	आदमी – _____
दियासलाई – _____	लाला जी – _____	पोता – _____	पोती – _____
बुढ़िया – _____	पूजा – _____	लड़की – _____	बहू – _____

तत्सम शब्द—जो संस्कृत भाषा के शब्द मूल रूप में हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे—दुग्ध, वायु आदि।

तद्भव शब्द—संस्कृत शब्दों से बिगड़कर बने शब्द जो हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, वे तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे—दूध, घी, गाय आदि।

(ज) निम्नलिखित शब्दों के सामने तत्सम या तद्भव लिखिए:

वायु – _____	लहर – _____	समीप – _____	स्त्री – _____
कान – _____	दिन – _____	जवान – _____	मुँह – _____
बहू – _____	सर्प – _____	नासिका – _____	पाद – _____

(झ) दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए:

1. पोशाक _____
2. बेहया _____
3. संभ्रांत _____

मौखिक अभ्यास

- निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए तथा लिखिए:

श्रेणी _____ पोशाक _____ तख्त _____ सूतक _____ बावली _____ चूनी-भूसी _____

नाटक मंचन

- पाठ में आई कहानी को नाटक का रूप देकर कक्षा में उसका अभिनय कीजिए।

अनुच्छेद लेखन

- 'गरीबों का समाज में स्थान' विषय पर एक अनुच्छेद नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए।

उच्च बौद्धिक स्तरीय प्रश्न (HOTS)

- पोशाक ही समाज में सम्मान एवं अपमान दिलाती है। कैसे?

जीवन कौशल (Life SKill)

- किसी के घर में मृत्यु हो जाना, एक दैवीय घटना है जिस पर किसी का वश नहीं रहता। यदि ऐसा किसी गरीब व्यक्ति के घर हो जाए तो आप उससे घृणा करने के स्थान पर उससे प्रेम करें। अपनी सहानुभूति दिखाएँ तथा जहाँ तक हो सके उसकी तन-मन-धन से सहायता करें।